श्री आदिनाथ जिन पूजन

स्थापना

(ज्ञानोदय छंद)

आदि जिनेश्वर आदिनाथ प्रभु के चरणों में करूँ नमन।
नाभिराय के राजदुलारे माँ मरुदेवी के नंदन।।
पतित जनों को नाथ आपने दिया मुक्ति का अवलंबन।
श्रद्धा भाव विनय से करता तव चरणों का आह्वानन।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(ज्ञानोदय छंद)

क्षीरोदधि का क्षीर वर्ण सम, श्रद्धा जल लेकर आया
श्री चरणों में भेंट चढ़ाने, और नहीं कुछ भी लाया।।
आदीश्वर जिनराज आपने, श्रद्धा जल यदि स्वीकारा।
पा जाऊँगा निश्चित ही मैं, जन्म मृत्यु से छुटकारा।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन जला स्वयं किंतु, अपनी सुगंध फैलाता है।
तव चरणों की पूजा का वह, द्रव्य स्वयं बन जाता है।।
आदीश्वर जिनराज हमारे, चंदन को यदि स्वीकारा।
पा जाऊँगा भवाताप से, निश्चित ही मैं छुटकारा।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल अक्षत तंदुल लेकर, द्वार आपके आया हूँ ।
दूर करोगे पाप बोझ से, आशा लेकर आया हूँ।।
आदीश्वर जिनराज अर्चना के अक्षत स्वीकार करो।
अखंड अक्षय सुख दो मुझको, नश्वरता से दूर करो।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

रोग भयंकर विषय भोग का, कहीं नहीं उपचार हुआ।
विवश हो गया मारा-मारा, हार गया लाचार हुआ।।
आदीश्वर जिनराज भक्ति के, सुमन यदि स्वीकारोगे।
है विश्वास अटल यह मेरा, निज सम आप बना लोगे।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमेरु पर्वत जितना खाया, क्षुधा रोग ना शांत हुआ।
कई समंदर रिक्त किये पर, तृषा रोग ना शमन हुआ।।
आदीश्वर जिनराज चरण में, चरु चढ़ाने आया हूँ ।
पूर्ण भरोसा तुम पर स्वामी, क्षुधा मेटने आया हूँ ।।5 ।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छाया मिथ्या घोर अँधेरा, गिरा अँधेरे में हर बार।
श्रद्धा दीपक आप जला दो, निज दर्शन कर लूँ इस बार।।
आदीश्वर जिनराज आपका, यह उपकार न भूलूँगा।
जब तक श्वास रहेगी घट में, तेरी ही जय बोलूँगा।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

किया बहुत पुरुषार्थ मगर, कर्मो का नाश न कर पाया।

अहंकार को तजकर प्रभु जी, आप शरण में हूँ आया।।
आदीश्वर जिनराज यदि मैं, एक नजर पा जाऊँगा।
संसारी फिर नहीं रहूँगा, मुक्तिनाथ कहलाऊँगा।।7।।
ऊँ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
मोक्ष मिलेगा इस आशा में, काल अनंता बिना दिया।
दुष्कर्मो ने ऐसा लूटा, नाम धर्म का मिटा दिया।।
आदीश्वर जिनराज शीष अब, अपना आज नवाऊँगा।
पार किया ना तुमने जिनवर, और कहाँ मैं जाऊँगा।।8।।
ऊँ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
मेरे पास नहीं कुछ स्वामी, कैसे अर्घ्य बनाऊँगा ।
आतम धन से निर्धन हूँ मैं, अब तुम सम बन जाऊँगा।।
आदीश्वर जिनराज आज यदि, अपना भक्त बनाओगे।
सच कहता हूँ शीघ्र मुझे भी, सिद्धालय में पाओगे।।9।।
ऊँ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं
पंचकल्याणक
सर्वार्थसिद्ध को तजकर स्वामी, नगर अयोध्या में आये।
कर्मभूमि के आदि जिनेश्वर, मरुदेवी उर में आये।।
शुभ आषाढ़ कृष्ण द्वितीया को, धन्य हुई यह वसुंधरा।
शरद पूर्णिमा का चंदा ही, मानो धरती पर उतरा।।1।।
ऊँ हीं आषाढ़कृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तीन लोक में सब जीवों को, कुछ पल सुख का भान हुआ।
जन्म हुआ है‘आदि’ प्रभु का, देवों को यह ज्ञान हुआ।।
चौत वदी नवमी का दिन था, नाभिराय गृह जन्म लिया।
गिरि सुमेरु पर पांडुक वन में, क्षीरोदधि से न्हवन किया।।2।।
ऊँ हीं चौत्रकृष्णनवम्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जन्म कलयाणक की खुशियाँ थी, तप संयम में बदल गई।
नीलांजन का नृत्य देख, दृष्टि शिव पाने मचल गई।।
चौत कृष्ण की नवमी शुभ थी, पंच मुष्टि कचलोंच किया।
जय-जय ऋषभनाथ जिनवर ने, उत्तम मुनि पद धार लिया ।।3।।
ऊँ हीं चौत्रकृष्णनवम्यां तपोमंगलमंडिताय श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
फाल्गुन वदी एकादशी को, प्रभु चार घातिया नाश किया।
कर पुरुषार्थ प्रबल जिनवर ने, केवलज्ञान प्रकाश लिया।।
समवसरण में सब जीवों के, मिथ्यातम का नाश हुआ।
हुई प्रफुल्लित धरती ही क्या, प्रमुदित सब आकाश हुआ।।4।।
ऊँ हीं फाल्गुनकृष्णएकादश्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
माघ कृष्ण चौदस के दिन, कैलाश गिरि ने यश पाया।
आठों कर्म विनाशे प्रभु ने, अष्टम वसुधा को पाया।।
तीर्थकर से परिणय करके, मुक्तिरमा भी धन्य हुई।
जय-जय आदीश्वर नारों की, पावन धरा अनन्य हुई।।5।।
ऊँ हीं माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जयमाला
दोहा
भक्ति भरी आराधना, कर लो प्रभु स्वीकार।

शरण आपकी पा गया, हो जाऊँगा पार ।।1।।

(ज्ञानोदय छंद)

जय-जय आदिनाथ तीर्थंकर, धर्म सारथी तुम्हें प्रणाम।
निज स्वभाव साधन से तुमने, पाया शाश्वत मुक्तिधाम।।
पंद्रह मास रतन बसे औ, माँ को सोलह स्वप्न दिये।
तीन ज्ञान के धारी जिनवर, भूतल पर विख्यात हुये।।2।।
जंबूद्वीप के भरत क्षेत्र में, नगर अयोध्या महा विशाल।
नाभिराय अंतिम कुलकर से, जन्में मरुदेवी के लाल।।
देवों ने अति हर्ष भाव से, पाण्डु शिला अभिषेक किया।
बालपने में ही जिनवर ने आत्म शक्ति को दिखा दिया।।3।।
राज्य अवस्था में ही सारे, जग के कष्ट मिटाये थे।
मोक्ष पंथ के राही थे पर, शुभ षट्कर्म सिखाये थे।।
नीलांजन का नृत्य देखकर, वस्तु स्वरूप विचार किया।
लौकांतिक देवों ने आकर, नत हो जय-जय कार किया ।।4।।
सिद्धारथ वन में जाकर प्रभु, निज आतम का किया मनन।
नमः सिद्धेभ्यःभावों से क, सब सिद्धों को किया नमन।।
एक हजार वर्ष तप करके, शुक्लध्यान में हुए मगन।
चार घातिया कर्म नाश कर, पाया केवलज्ञान गगन।।5।।
मैं संसारी कर्म जाल में, फंसा चतुर्गति किया भ्रमण।
रुचि न जागी सिद्ध स्व पद की, अतः कर रहा जन्म मरण।।
समवसरण में नाथ आपने, सप्त तत्त्व उपदेश दिया।
वृषभसेन गणधर से श्रोता, भारतराज ब्राह्मी आर्या।।6।।
धर्मचक्र का किया प्रवर्तन मंगल मय जब हुआ विहार।
धन्य हुआ कैलाशधाम जब, हुआ कर्म का उपसंहार।।
बिना आपकी शरण जिनेश्वर, अनंत भव में भ्रमण किया।
सिद्धालय को पा जाऊँ बस, इसी भाव से शरण लिया ।।7।।
आज आपकी पूजा करके, मेरे मन आनंद हुआ।
पुण्य कर्म का उदय हुआ औ, पाप कर्म भी मंद हुआ।।
हेप्रभुवर तव पथ पर चलकर, शाश्वत सुख को पा जाऊँ ।
घबराया हूँ इस भव वन में, कब शिवनगरी आ जाऊँ ।।8।।
आदि तीर्थ करतार जिनेश्वर, मुक्ति के प्रभु हो आधार।
दुष्कर्मो का नाश कीजिये, शीघ्र करो मेरा उद्धार।।
ज्ञान नहीं है शब्द नहीं हैं, भावों की गूंथी यह माल।
नमन करूँ स्वीकारो जिनवर, श्रद्धा से अर्चित जयमाल।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता

हेप्रथम जिनेश्वर, श्री आदीश्वर, भव-भव का संताप हरो।
निज पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वादः।।